इस लोकसभा चुनाव में झारखंड के साथ-साथ बिहार में ठगबंधन दलों का सूपड़ा साफ होनेवाला है. झारखंड की जनता ने राजद के नेता और सुप्रीमो लालू प्रसाद का चरित्र देखा है. वे कभी नहीं चाहते थे कि झारखंड अलग राज्य बने.

अनिल सिन्हा, भाजपा के प्रवक्ता सह राज्य के पूर्व महाधिवक्ता

मुख्यमंत्री रघुवर दास पिछड़े वर्ग के लोगो को 27 प्रतिशत आरक्षण देने के नाम पर बरगलाने व धोखा देने का काम कर रहे हैं. मुख्यमंत्री आरक्षण पर विधानसभा में विरोध करते हैं और बाहर भाषण में लोगों से झूठ बोलते हैं.

कैलाश यादव, प्रवक्ता सह राजद महासचिव

गप्पू चचा

आज सब क्लियर हो गया है हो...

एक सीट पर काफी टेंशन था. कोयलांचल का मामला है. आज सब क्लियर हो गया. चचा के पास दोनों भतीजा पहुंचे, एक त प्रत्याशिये है. पहले चचा तमतमाये हुए थे, लेकिन दुन्नो भतीजवा इनको का घुट्टी पिला दिये कि चचा धीमा पड़ गये. ऐसे त दिल्लीओ से भी इनको टाइट किये हुए था. टिकटवा किसी का भी कटेगा त मुडवा ऑफ होगा ना भइया? इसी में शुरू में रेस धरले थे, जो अब धीमा हो गया. एगो से का होगा भइया, इहां त राजधानियो तेजी धरले है. उसको कइसे रोकेगा. राजधानी चचा त अकेले लड़े ला मैदान में फेंटा बांध कर कूद गये हैं. इनकर स्टेशनवा कहां होगा. गप्पू चचा, चाय की चुस्कियों के साथ अपने दोस्त से बतिया रहे थे. गप्पू चचा काफी टेंशन में दिख रहे हैं. गप्पू चचा सिर खुजाते हुए कहते हैं कि इ राजनीतियों बड़ा पेंच वाला काम है, हो. लेकिन, बड़का चचवा का आशीर्वाद रहेगा त सब कुछ ठीक हो जायेगा.

ई ठीक है

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम से देश भर के व्यापारियों को संबोधन सामान्य घटना नहीं है. पहली बार देश का कोई प्रधानमंत्री व्यापारियों को सम्मानित मतदाता और देश चलाने के लिए टैक्स देनेवाला प्रतिष्ठित समुदाय बताकर संबोधित कर रहा है. मोदी हैं तो मुमकिन है.

महेश पोद्दार, झारखंड से भाजपा के राज्यसभा सांसद

बड़े नेताओं की गाड़ी, हेलीकॉप्टर और जहाज, जिसको चुनाव के समय उपयोग करते हों, उसकी जांच निश्चित होनी चाहिए.

- बाबूलाल मरांडी, झाविमो के अध्यक्ष सह महागठबंधन के कोडरमा प्रत्याशी

साध्वी प्रज्ञा आतंकवादी है. इसमें किंतु, परंतु बिलकुल नहीं है. क्लियर कट वह आतंकवादी है. अगर आज शहीद हेमंत करकरे हमारे बीच होते, तो आतंकवादी साध्वी प्रज्ञा जेल में होती. पीपी रोहिणी साल्यान ने 2015 में कह दिया था कि सरकार की तरफ से नरमी दिखायी जा रही है.

डॉ अजय कुमार, कांग्रेस के झारखंड प्रदेश अध्यक्ष

यही है मेरी पसंद

प्रतिनिधित्व के मापदंड पर खरा उतरनेवाला हो हमारा सांसद

सांसद यानी जनता का प्रतिनिधि. वह व्यक्ति जो हमारी गैर मौजूदगी में हमारा प्रतिनिधित्व करता है. वह जिसे चुनकर हम केंद्र सरकार का हिस्सा बनने के लिए भेजते हैं, इस उम्मीद के साथ कि वह भविष्य में

हमारे और सरकार के बीच संवाद का एक जरिया बनेगा. हमारा सांसद प्रतिनिधित्व के मापदंड पर पूरी तरह खरा उतरने वाला हो. अपने प्रदेश, क्षेत्र और लोगों के लिए समर्पित, दलगत भावनाओं से ऊपर और आदर्श चरित्र वाला हो. वैसा व्यक्ति हो, जो हमारी समस्याओं को सुनने के लिए सुलभता से उपलब्ध हो. गरीब, असहाय और जरूरतमंदों के मुद्दों को तत्परता से उठाये. जो क्षेत्र की खामियों को गहराई से जानता हो. योजनाओं को कर्मठता से लागू करे. सांसद निधि का दुरुपयोग करने वाला न हो. उसकी पृष्ठभूमि भी आपराधिक न हो. लोगों को शोषण से बचाये और उनके अधिकार दिलाये. ऐसा न हो, जो वोट लेकर नदारद हो जाये.

- शालिनी साबू, रिसर्च स्कॉलर, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ झारखंड, रांची

इनकी भी सुनें

जिसकी नजरें आसमान पर हो और कदम जमीन पर. नये खयालात का हो लेकिन भारतीय संस्कृति से भी गहराई से जुड़ा हो. जो पौराणिक संस्कार और आधुनिक तकनीक को खुद में आत्मसात किये हो. जिसके विचारों में व्यापकता हो और जिसकी वाणी में ओजस्विता. ऐसा व्यक्ति जिसे देखकर अपनापन का भाव उत्पन्न हो. जनता के दुख-सुख में खड़ा रहे. सादा जीवन, उच्च विचार वाला हो. साथ ही महिलाओं के प्रति सम्मान की भावना रखता हो. वो तमाम सुविधाएं शहर में मुहैया कराये, जिसके लिए लोग महानगरों का रुख करते हैं.

सुप्रिया पाठक, गृहिणी

हमारा सांसद ऐसा हो,जो युवाओं की आवाज बने. हर वर्ग के कल्याण की सोचे और योजनाओं का काम धरातल पर उतारे. आज रोजगार एक बड़ी समस्या है. इस ओर ध्यान देते हुए पंचायत, कस्बा, ब्लॉक स्तर पर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने का प्रयास करे.

वसीम आलम अंसारी

हमारा सांसद जनता के प्रति जवाबदेही महसूस करे और उसमें क्षेत्र के विकास के लिए कोई परिकल्पना हो. एक सांसद का दायित्व है कि वह अपने क्षेत्र की समस्याओं को संसद तक पहुंचाये. आम लोगों की खुशहाली का माध्यम बने.

आदित्य कश्यप, युवा समाजसेवी

उसे दु:ख-सुख में हमेशा लोगों के बीच रहना चाहिए. चुनाव के समय भी और चुनाव के बाद भी. गरीबों के बीच भी रहे, उनका काम करे और उनकी समस्याओं का समाधान तुरंत निकाले. सांसद निधि का उपयोग लोगों के हित में करे. उसका पढ़ा-लिखा होना जरूरी है.

तौसिफ खान

प्रभात चौपाल : पलामू संसदीय क्षेत्र

झारखंड में लोकसभा चुनाव के पहले चरण में पलामू, चतरा और लोहरदगा में चुनाव होने हैं. मैदान में कई दावेदार हैं. कहीं वर्तमान सांसद फिर से उम्मीदवार हैं, तो कहीं नये चेहरे मैदान में हैं. हर सीट पर मुकाबला तीखा है. जनता के भी सवाल हैं. जनता भी अपने जनप्रतिनिधि से उनके काम का हिसाब मांग रही है. जनता प्रत्याशियों का विजन जानना चाहती है. अपने सवालों व समस्याओं का हल जनना चाहती है. प्रभात खबर ने पहल करते हुए प्रमुख दावेदारों से पांच सवाल किये हैं. प्रत्याशियों ने भी खुल कर अपने विचार रखे हैं.

इलाके का विकास करेंगे, क्षेत्र की गरिमा बढ़ायेंगे : वीडी राम

जनता आपको क्यों चुने?

पलामू के वर्तमान सांसद व लोकसभा चुनाव में भाजपा के प्रत्याशी वीडी राम ने कहा : सांसद चुने जाने के बाद लगातार इलाके की बेहतरी के लिए काम किया. हमेशा कोशिश की कि ऐसा कार्य करें, जिससे पलामू संसदीय क्षेत्र की गरिमा बढ़े. पूर्व में सांसदों के प्रति यह धारणा बन गयी थी कि सांसद चुनाव जीतने के बाद मिलते नहीं. लेकिन इस धारणा को तोड़ा, जनता से लगातार संपर्क में रहे.

आप दूसरे प्रत्याशी से किस मायने में अलग हैं?

खुद अपने बारे में आकलन करना और बताना मुश्किल है. इतना जरूर है कि इस बात को जनता महसूस करती है कि दूसरे सांसदों की तुलना में उन्होंने पलामू में बेहतर किया है. भाजपा का लक्ष्य सबका साथ सबका विकास है. भाजपा के लिए देश पहले है. इस सोच के तहत काम करने वाले पार्टी के प्रत्याशी होने के नाते वह दूसरों से तो इस मायने में अलग हैं ही.

आपकी प्राथमिकता क्या होगी?

अभी तक राजहरा कोलियरी को खुलवाने में सफलता मिली है. इसी तरह पलामू के बंद पड़े खदान सेमरा, सोकर जैसे अन्य खदानों को चालू कराना, पेयजल आपूर्ति की व्यवस्था कराना, किसानों के खेतों तक पानी पहुंचे, इसे सुनिश्चित कराने के साथ पलामू में नॉलेज पार्क की स्थापना उनकी प्राथमिकता है.

ऐसा आप क्या नया करेंगे, जो अभी तक आपके क्षेत्र में नहीं हुआ?

हमेशा हमने नया करने की कोशिश की है. आगे भी पलामू-गढ़वा के लिए बेहतर करेंगे.

संसदीय क्षेत्र के कौन से मुद्दे या समस्या को आप दूर करने के लिए तुरंत पहल करेंगे?

रोजगार की व्यवस्था और पलामू को सुखाड़ से मुक्ति दिलाने के लिए पहल करेंगे. पांच वर्षों के कार्यकाल में इस दिशा में प्रयास भी हुआ है. कई सिंचाई परियोजनाओं को लागू किया गया है. जिस तरह राजहरा कोलियरी में फिर से उत्पादन शुरू करने की प्रक्रिया शुरू हुई है, उसी तरह जपला में फैक्ट्री की स्थापना कराना उनकी प्राथमिकता है.

पलामू का बेटा हूं, माटी की सेवा की, आगे भी करूंगा : घुरन राम

जनता आपको क्यों चुने?

पलामू से यूपीए गठबंधन के प्रत्याशी घुरन राम राजद के टिकट से चुनाव लड़ रहे हैं. वह पूर्व में पलामू के सांसद भी रहे हैं. उन्होंने कहा : पलामू का बेटा हूं. निरंतर इस माटी की सेवा की है. इसकी बेहतरी के लिए सोचा है और कार्य किया है. इसलिए जनता मुझे चुने.

आप दूसरे प्रत्याशी से किस मायने में अलग हैं?

मैं कहीं बाहर से नहीं आया हूं. पलामू संसदीय क्षेत्र में ही मेरा जन्म हुआ. यहीं पले-बढ़े और इसी इलाके की जनता के आशीर्वाद से सेवा की. 18 माह के सांसद के कार्यकाल में बेहतर करने की कोशिश की. इलाके की तस्वीर को बदला.

आपकी प्राथमिकता क्या होगी?

पलामू संसदीय क्षेत्र की समस्या को दूर करना मेरी प्राथमिकता होगी. अभी इलाके की हालत काफी दयनीय है. कहा जा रहा है मेडिकल कॉलेज खुल गया, पर अस्पताल में डॉक्टर की कमी है. गांव-गांव में पानी के लिए हाहाकार मचा है. अनुबंधकर्मी, पारा शिक्षकों के साथ सरकार अन्याय कर रही है. क्षेत्र की समस्या को दूर करते हुए पारा शिक्षक, अनुबंधकर्मियों को न्याय दिलाना उनकी प्राथमिकता होगी.

ऐसा आप क्या नया करेंगे, जो अभी तक आपके क्षेत्र में नहीं हुआ?

देखिये, मैं 18 माह तक सांसद रहा. 18 माह में ही नया काम किया. रफीगंज से कजरी तक रेलवे लाइन बिछाने की स्वीकृति दिलायी. बाद में इस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया. वैसे इलाके जहां सुविधा का अभाव है, वहां तक सुविधा पहुंचायेंगे. जनता का आशीर्वाद मिला, तो इस बार भी नया करके दिखायेंगे.

संसदीय क्षेत्र के कौन से मुद्दे या समस्या को आप दूर करने के लिए तुरंत पहल करेंगे?

संसदीय क्षेत्र में समस्या का अंबार लगा है. ईमानदारी के साथ कहूं, तो इन समस्याओं को दूर करने का प्रयास पिछले पांच वर्षों में नहीं किया गया. बेरोजगारों को रोजगार, किसानों को सिंचाई की बेहतर सुविधा उपलब्ध कराने के साथ-साथ पलामू-गढ़वा में बिजली, पानी की समस्या दूर कराना उनकी प्राथमिकता होगी.

दूसरे चरण के चुनाव में कुल 16 करोड़पतियों ने किया नामांकन

करोड़पति प्रत्याशियों में जयंत सिन्हा अव्वल, मरांडी फिसड्डी

शकील अख्तर ▷ रांची

लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण के चार संसदीय क्षेत्रों में कुल 16 करोड़पति प्रत्याशियों ने नामांकन किया है. वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में भी इन चार संसदीय क्षेत्रों से 16 करोड़पति उम्मीदवार चुनाव मैदान में थे. 2014 के मुकाबले 2019 में रांची और हजारीबाग में करोड़पति उम्मीदवारों की संख्या कम हुई है. हालांकि खूंटी में बराबर है जबकि कोडरमा में करोड़पति उम्मीदवारों की संख्या तीन गुनी हो गयी है. दूसरे चरण के इन करोड़पतियों में सबसे ज्यादा संपत्ति (76.91 करोड़) केंद्रीय राज्य उड्डयन मंत्री जयंत सिन्हा के पास और सबसे कम (1.09 करोड़) राज्य के पहले मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी के पास है.

दूसरे चरण के चार संसदीय क्षेत्रों के इन करोड़पति उम्मीदवारों में पूर्व केंद्रीय गृह मंत्री सुबोधकांत सहाय की संपत्ति पहले के मुकाबले कम हो गयी है. वर्ष 2014 में उनके पास 5.88 करोड़ की संपत्ति थी, जो 2019 में घट कर 4.70 करोड़ रह गयी है. रांची के सांसद रामटहल चौधरी के पास 2014 में 1.09 करोड़ की थी. 2019 में उनकी संपत्ति में चार गुना वृद्ध हुई और अब उनके पास 4.59 करोड़ की संपत्ति हो गयी है. वह अब डेयरी फार्म चला रहे हैं और दूध बेच रहे हैं. कोडरमा से माले के प्रत्याशी राजकुमार यादव अब करोड़पति हो गये हैं. उनके पास 1.49 करोड़ रुपये की संपत्ति है. हालांकि 2014 में वह करीब 25 लाख रुपये की संपत्ति के मालिक थे. दूसरे चरण के इन करोड़पति प्रत्याशियों में दो महिलाएं भी शामिल हैं. जनता दल छोड़ने के बाद भाजपा प्रत्याशी के रूप में कोडरमा से चुनाव मैदान में उतरी अन्नपूर्णा देवी करोड़पति हैं. इसके अलावा खूंटी संसदीय क्षेत्र से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में पर्चा दाखिल करनेवाली मीनाक्षी मुंडा करोड़पति हैं. वह असिस्टेंट प्रोफेसर (अस्थायी) के रूप में कार्यरत हैं. नामांकन के समय दायर किये गये शपथ पत्र के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में करोड़पति उम्मीदवारों की संख्या छह थी. 2019 में यह घट कर पांच हो गयी है. हजारीबाग में 2014 लोकसभा के चुनाव में सात करोड़पति उम्मीदवार मैदान में थे. हालांकि 2019 में पांच करोड़पति उम्मीदवार ही मैदान में हैं. खूंटी संसदीय क्षेत्र से 2019 में दो करोड़पति उम्मीदवार मैदान में हैं. यहां से 2014 में भी दो ही करोड़पति उम्मीदवार मैदान में थे. कोडरमा संसदीय क्षेत्र से 2019 में तीन करोड़पति मैदान में हैं. 2014 में सिर्फ एक ही करोड़पति मैदान में थे.

रांची सीट से सुबोधकांत सहाय के 4.70 करोड़ के मुकाबले रामटहल के पास 4.59 करोड़ की संपत्ति

हजारीबाग के करोड़पति प्रत्याशियों का ब्योरा

नाम	दल	संपत्ति	शिक्षा	अपराध
जयंत सिन्हा	बीजेपी	76.91 करोड़	एमबीए	नहीं है
गोपाल साहू	कांग्रेस	33.62 करोड़	स्नातक	नहीं है
भुनेश्वर मेहता	भाकपा	3.89 करोड़	इंटर	एक मामला
विनोद कुमार	बीएसपी	2.76 करोड़	स्नातक	नहीं है
नदीम खान	मासकप	1.36 करोड़	इंटर	नहीं है

रांची के करोड़पति प्रत्याशियों का ब्योरा

नाम	दल	संपत्ति	शिक्षा	अपराध
सुबोधकांत	कांग्रेस	4.70 करोड़	स्नातक	एक मामला
संजय सेठ	भाजपा	1.40 करोड़	एलएलबी	नहीं है
रामटहल चौधरी	निर्दलीय	4.59करोड़	मैट्रिक	नहीं है
दिनेश्वर टोप्पो	निर्दलीय	4.56 करोड़	स्नातक	नहीं है
जीतेंद्र ठाकुर	निर्दलीय	1.15 करोड़	डिप्लोमा इन इंजीनियरिंग	नहीं है
विद्याधर प्रसाद	बीएसपी	1.94करोड़	कास्ट अकाउंटेंट	नहीं है

खूंटी के करोड़पति प्रत्याशियों का ब्योरा

नाम	दल	संपत्ति	शिक्षा	अपराध
अर्जुन मुंडा	भाजपा	8.72 करोड़	बीपीपी	नहीं है
मीनाक्षी मुंडा	निर्दलीय	1.12 करोड़	पीएचडी	नहीं है

कोडरमा के करोड़पति प्रत्याशियों का ब्योरा

नाम	दल	संपत्ति	शिक्षा	अपराध
अन्नपूर्णा देवी	भाजपा	7.85 करोड़	एमए	नहीं है
राजकुमार यादव	माले	1.49 करोड़	मैट्रिक	चार मामले
बाबूलाल मरांडी	जेवीएम	1.09 करोड़	स्नातक	10 मामले

क्राउड फंडिंग से पैसा जुटा कर चुनाव लड़ रहे हैं पारा शिक्षकों के नेता

सुनील चौधरी ▷ रांची

पारा शिक्षकों के लिए आंदोलन करनेवाले नेता भी अब चुनावी मैदान में खुद उतर पड़े हैं. पैसा नहीं है, तो क्राउड फंडिंग का सहारा ले रहे हैं. ये अपना मकसद बता रहे हैं कि क्यों और कैसे चुनाव लड़ रहे हैं. बिहार के बेगूसराय से कन्हैया ने जिस प्रकार क्राउड फंडिंग से बड़ी रकम जुटायी, उसी प्रकार झारखंड के हजारीबाग और गोड्डा से चुनाव लड़ने वाले दो नेता भी क्राउड फंडिंग से पैसा जुटा रहे हैं. हालांकि इनका तरीका कन्हैया कुमार से कुछ अलग है. हजारीबाग से गौतम कुमार और गोड्डा से वीरेंद्र चुनावी मैदान में उतर चुके हैं. दोनों साधारण परिवार से हैं.

गोड्डा से जेएनयू के छात्र और पूर्व पारा शिक्षक वीरेंद्र लड़ रहे हैं चुनाव

जेएनयू के छात्र हैं वीरेंद्र कुमार

गोड्डा लोकसभा से जेएनयू के छात्र वीरेंद्र कुमार झारखंड जनतांत्रिक महासभा के उम्मीदवार रूप में चुनाव लड़ने जा रहे हैं. ये जेएनयू के शोधार्थी हैं. इनका घर हंसडीहा में है और पिता दैनिक मजदूरी का काम करते हैं. वीरेंद्र बताते हैं कि वे लंबे समय से छात्र राजनीति से जुड़े रहे हैं. बताया कि उन्होंने झारखंड के अंदर क्रमश: 430 किलोमीटर की दो पदयात्रा की. पहला घाटशिला से रांची तक, दूसरा महगामा से गोड्डा, देवघर, मधुपुर होते हुए दुमका तक. जेएनयू जाने के पहले वे पारा शिक्षक के रूप में भी काम कर चुके हैं. वीरेंद्र कुमार ने कहा कि गोड्डा लोकसभा में हमारी लड़ाई भाजपा के खिलाफ है. यह चुनाव हमलोग भाजपा और अडानी के खिलाफ लड़ रहे हैं. फंड जुटाने के तरीकों पर बताया कि अभी घर-घर जाकर लोगों से फंड जुटा रहे हैं. नामांकन के बाद ऑनलाइन तरीके से क्राउड फंडिंग करेंगे. उनके प्रचार में जेएनयू के कई रिसर्च स्कॉलर व छात्र शामिल होंगे.

70 हजार जमा कर चुके हैं गौतम

हजारीबाग के रहने वाले गौतम कुमार पारा शिक्षकों और अनुबंधकर्मियों को स्थायी करने की मांग को लेकर लगातार आंदोलन करते हैं. इस मांग को लेकर पांच दिसंबर 2018 को हजारीबाग उपायुक्त कार्यालय के समक्ष इन्होंने आत्मदाह का प्रयास किया था. इचाक के रहनेवाले गौतम ने विनोबा भावे विवि से बायोटेक में स्नातक किया है. 2014 में बगोदर विधानसभा से भी चुनाव लड़ चुके हैं. तब इन्हें 1800 वोट मिला था. अब हजारीबाग लोकसभा सीट से चुनाव लड़ रहे हैं. गौतम बताते हैं कि उनके पीछे 15 हजार पारा शिक्षकों व हजारों जल सहिया, रसोइया तथा अनुबंधकर्मियों का साथ है. ये कहते हैं कि चुनाव लड़ने के लिए इनके पास पांच रुपये भी नहीं है. पर क्राउड फंडिंग से 70 हजार रुपये अब तक जमा कर चुके हैं. ये कहते हैं कि 18 अप्रैल को नामांकन दाखिल किया है. स्क्रूटनी के बाद ये भी ऑनलाइन प्लेटफार्म से क्राउड फंडिंग का सहारा लेंगे.

भाजपा विधायकों को प्रत्याशी की जीत तय करने का निर्देश, कांग्रेस-झामुमो के विधायकों को मिला टास्क

विधायकों को पार्टी को लीड कराने का टास्क, नहीं तो पड़ेंगे संकट में

कितनी है प्रमुख पार्टी के विधायकों की संख्या

भाजपा	झामुमो	कांग्रेस (गीता कोड़ा भी)	झाविमो	आजसू
43	19	09	02	05

➲ **रैली व सभा में समर्थकों को जुटाने से लेकर सभा के आयोजन तक का जिम्मा है विधायकों के पास**

सुनील चौधरी ▷ रांची

झारखंड के लोकसभा चुनाव में इस बार वर्तमान विधायकों की प्रतिष्ठा भी दांव पर है. उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती अपने विधानसभा क्षेत्र में अपनी पार्टी या सहयोगी पार्टी के प्रत्याशी को लीड दिलाने की है. यदि संबंधित विधानसभा क्षेत्र में लीड नहीं मिला, तो छह महीने बाद होनेवाले विधानसभा चुनाव में उनके टिकट का मामला फंस सकता है. इसे देखते हुए सभी दलों के विधायक भी लोकसभा प्रत्याशियों के साथ खुद भी मेहनत कर रहे हैं. रैली हो या सभा, वहां समर्थकों को जुटाने से लेकर सभा आयोजन तक का काम विधायकों को ही करना पड़ रहा है.

विधायकों के मामले में एनडीए मजबूत : झारखंड में कुल 81 विधानसभा सीट है और 14 लोकसभा सीट है. 14 लोकसभा में 12 सीट भाजपा के पास है और दो सीट झामुमो के पास है. जहां तक विधायकों की संख्या की बात है, तो इस समय सबसे अधिक विधायक एनडीए गठबंधन में हैं. एनडीए गठबंधन में भाजपा और आजसू हैं. भाजपा के पास इस समय 43 विधायक है और आजसू के पास पांच यानी कुल 48 विधायक हैं. आजसू के पांच विधायकों में एक विधायक चंद्रप्रकाश चौधरी गिरिडीह सीट से आजसू प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ रहे हैं.

सभी दलों के विधायकों के लिए चुनौती भरा काम

रांची और खूंटी की तरह ही अन्य लोकसभा क्षेत्र में ही जहां-जहां जिस दल के विधायक हैं, उन्हें अपने दल या सहयोगी दल के प्रत्याशी को जीत दिलाना चुनौती भरा काम होगा. इधर, हजारीबाग लोकसभा सीट में पड़नेवाले रामगढ़ विधानसभा पर भी सबकी नजर है. वजह है कि रामगढ़ के विधायक चंद्रप्रकाश चौधरी इस बार गिरिडीह लोकसभा सीट से खुद ही चुनाव लड़ रहे हैं. जबकि हजारीबाग सीट से भाजपा के जयंत सिन्हा उम्मीदवार हैं. अब श्री चौधरी गिरिडीह में व्यस्त हैं, तो उन्हें रामगढ़ से भाजपा को लीड दिलाना चुनौती भरा काम होगा.

दूसरे स्थान पर झामुमो है, जिसके पास 19 विधायक हैं. इनमें दो विधायक जगरनाथ महतो और चंपई सोरेन खुद ही चुनाव लड़ रहे हैं. कांग्रेस के पास आठ विधायक हैं. गीता कोड़ा के कांग्रेस में शामिल हो जाने के बाद विधायकों की संख्या नौ हो गयी है. इनमें दो विधायक गीता कोड़ा चाईबासा से और सुखदेव भगत लोहरदगा से लोकसभा का चुनाव लड़ रहे हैं. झाविमो के पास दो विधायक हैं. इनमें एक विधायक प्रदीप यादव खुद ही गोड्डा सीट से चुनाव लड़ रहे हैं.

भाजपा ने दिया है सख्त निर्देश : भाजपा की लगभग सभी बैठकों में विधायकों को बार-बार हिदायत दी गयी है कि अपने-अपने क्षेत्र में एनडीए प्रत्याशी की जीत सुनिश्चित करें. सूत्रों ने बताया कि जो विधायक अपने-अपने क्षेत्र में लीड नहीं करेंगे, तो नवंबर-दिसंबर 2019 में होने वाले विधानसभा चुनाव में इनके परफार्मेंस के आधार पर टिकट वितरण में पार्टी पुनर्विचार करेगी. यानी उनका टिकट भी कट सकता है. जैसे कि रांची लोकसभा सीट में छह विधानसभा सीट है. इसमें सिल्ली, रांची, कांके, हटिया, खिजरी व इचागढ़ विधानसभा सीट है. इन छह विधानसभा सीट में पांच सीट पर भाजपा का कब्जा है. केवल सिल्ली सीट है, जहां झामुमो का कब्जा है. इन पांचों सीट के वर्तमान विधायकों के समक्ष प्रत्याशी को जीत दिलाने की चुनौती होगी. वहीं सिल्ली से झामुमो की विधायक को गठबंधन के तहत कांग्रेस प्रत्याशी की जीत सुनिश्चित करने की चुनौती होगी. रांची लोकसभा में कांग्रेस के पास फिलहाल कोई सीट नहीं है.

इसी तरह खूंटी लोकसभा सीट में खरसावां, तमाड़, तोरपा, खूंटी, कोलेबिरा और सिमडेगा सीट आता है. इन छह विधानसभा सीट में खरसावां और तोरपा झामुमो के पास है. कोलेबिरा कांग्रेस के पास और तमाड़ आजसू के पास है. जबकि खूंटी और सिमडेगा भाजपा के पास है. खूंटी लोकसभा सीट से भाजपा के उम्मीदवार अर्जुन मुंडा हैं, तो कांग्रेस की तरफ से काली चरण मुंडा मैदान हैं. काली चरण मुंडा कांग्रेस के हैं पर उनके भाई खूंटी के विधायक नीलकंठ सिंह मुंडा हैं. यानी नीलकंठ सिंह मुंडा के पास खूंटी से अर्जुन मुंडा को जिताना एक बड़ी चुनौती होगी. वहीं तमाड़ सीट एनडीए के घटक दल आजसू के पास है. यहां से विकास मुंडा विधायक हैं. अभी वो विक्षुब्ध चल रहे हैं. यह सीट भी चुनौती भरी होगी. वहीं तोरपा और खरसावां से कांग्रेस को लीड दिलाना झामुमो के लिए चुनौती भरा काम होगा.

मुंबई आतंकी हमले में आतंकवादियों से सीधे भिड़ने वाले शहीद हेमंत करकरे के बलिदान को 'उसके कर्मों की सजा' बता रही हैं भोपाल-प्रत्याशी. जो मंच पर बैठे हैं, वे एक चुनावी हार-जीत के लिए बेशर्मी से ताली बजा रहे हैं! देश के लिए वर्दी में शहीद हो चुके एक सिपाही के साथ ये सलूक?

डॉ कुमार विश्वास, आप नेता

पतित राजनीति की 'माया' देखिए कि ढाई दशक से सत्ता के लालच में लूट खसोट व भ्रष्टाचार में लिप्त एक दूसरे को नीच कहने वाले, पागलखाने भेजने वाले, गुंडों से अस्मिता तार-तार करवाने वाले आज एक दूसरे के लिए 'मुलायम' हो गये.

योगी आदित्यनाथ, सीएम, उप्र

FAKE NEWS

सच तो यह है

मुजफ्फरनगर में वोटिंग की तस्वीर असली नहीं

पहले चरण में मुजफ्फरनगर में कथित रूप से बुर्का पहने एक पुरुष के वोट डालने के दावे के साथ यह तस्वीर वायरल हो रही है. कहा जा रहा है कि भाजपा प्रत्याशी संजीव बालियान का शक सही है कि बुर्के में पुरुष वोट डाल रहे हैं. हकीकत यह है कि यह तस्वीर पुरानी है.

पहले भी हुई वायरल

चुनाव आयोग के अनुसार ऐसी कोई घटना संज्ञान में नहीं आयी है. जो तस्वीर 11 अप्रैल की बतायी जा रही है, वह पुरानी है. 2015 में इसे यह बता कर वायरल किया गया था कि बुर्का पहने व्यक्ति ने एक मंदिर में बीफ फेंका है.

पड़ताल में यह खबर झूठी निकली.

यह भी जानें

मतदान कम हो या ज्यादा, जानिए किसका फायदा

नयी दिल्ली. आमतौर पर माना जाता है कि अधिक मतदान से भाजपा फायदे में रहती है, लेकिन 2014 में भाजपा ने प्रमुख राज्यों में जो सीटें जीतीं, उनमें से अधिकतर का मतदान प्रतिशत प्रदेश के औसत मतदान से कम रहा था. यूपी और महाराष्ट्र जैसे बड़े राज्यों इसमें अपवाद रहे, जहां भाजपा की जीती सीटों पर प्रदेश के औसत से अधिक वोट पड़े. एक विश्लेषण...

कम मतदान पर भाजपा को हुआ लाभ

तमिलनाडु की 39 में से भाजपा ने एक सीट कन्याकुमारी जीती थी. यहां 67.53% मतदान हुआ था, जो प्रदेश में औसत मतदान से सवा छह प्रतिशत कम था. ओड़िशा की सुंदरगढ़ सीट पर वह प्रदेश के औसत से दो प्रतिशत कम मतदान के बावजूद जीती. बिहार, कर्नाटक, मप्र आदि राज्यों में जहां उसने भारी जीत पायी, वहां भी जीती गयी सीटों पर हुए औसत मतदान से अधिक मतदान प्रदेश की बाकी सीटों पर हुआ था.

राज्य	मतदान	भाजपा की जीती सीटों पर मतदान	कुल सीटें/ सीटें जीतीं
आंध्र प्रदेश	74.64	67.57	25/3
तमिलनाडु	73.74	67.53	39/1
अरुणाचल प्रदेश	79.12	75.60	2/1
पश्चिम बंगाल	82.22	78.60	42/2
पंजाब	70.63	67.11	13/2
ओड़िशा	73.79	71.66	21/1
बिहार	56.26	55.29	40/22
कर्नाटक	67.20	66.55	28/17
झारखंड	63.82	62.84	14/12
हरियाणा	71.45	70.67	10/7
असम	80.12	79.12	14/7
मध्य प्रदेश	61.61	61.10	29/27

बड़ी जीत में प्रतिशत ज्यादा

यूपी, महाराष्ट्र व छत्तीसगढ़ आदि में भाजपा ने शानदार प्रदर्शन किया था, वहां उसकी जीती सीटों पर प्रदेश के औसत से अधिक वोट पड़े. हालांकि, जम्मू-कश्मीर छोड़कर अन्य जगह यह अंतर मामूली था. जम्मू-कश्मीर में यह अंतर बीस प्रतिशत था.

राज्य	मतदान	भाजपा की जीती सीटों पर मतदान	कुल सीटें/ सीटें जीतीं
उत्तर प्रदेश	58.44	58.70	80/71
छत्तीसगढ़	69.39	69.69	11/10
महाराष्ट्र	60.32	61.23	48/23
जम्मू-कश्मीर	49.72	69.84	06/3

ग्राउंड रिपोर्ट. 34 साल पुराने इतिहास को दोहराने की कोशिश में कांग्रेस

भोपाल में दिग्विजय और साध्वी प्रज्ञा की लड़ाई दिलचस्प मोड़ पर

30 साल से भाजपा का मजबूत किला

भोपाल से मिथिलेश

शाम के सात बजे भोपाल शहर के एक पॉश इलाके रिवेरा क्लब कॉलोनी में मप्र के पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह लोगों से पूछ रहे हैं- कितने लोगों के पास उज्ज्वला गैस कनेक्शन है? सब चुप. एक व्यक्ति ने खड़े होकर कहा- इसमें लाभ ही नहीं है, तो क्यूं लें? दिग्विजय सिंह हाथ में माइक लेकर कहते हैं- कांग्रेस की सरकार बनी, तो उज्ज्वला योजना बंद. डीलरों पर चल रहे केस भी वापस. राजा साहब कहते हैं- आप लोग मुझे वोट देंगे? भीड़ से आवाज आती है- हां. अपनी जेब में रखे मोबाइल की ओर इशारा करते हुए राजा साहब कहते हैं- मेरा नंबर भी सब लोग लिख लो. फोन मत करना. मैसेज भेजना. 24 से 48 घंटे के अंदर मैं जवाब दूंगा.

विधानसभा चुनाव में मिली जीत से कांग्रेस उत्साहित है. शुरुआत में ऐसा लग रहा था कि दिग्विजय सिंह की लड़ाई मुश्किल नहीं होगी, पर भाजपा ने उनके मुकाबले साध्वी प्रज्ञा ठाकुर को उतार कर मुकाबले को दिलचस्प बना दिया है.

साध्वी मंच पर रोती हैं. अपने ऊपर हुए जेल में अत्याचार की कहानी कहती हैं. साथ में दिग्विजय सिंह पर व्यक्तिगत हमले भी करती हैं. उनकी दूसरी शादी पर भी आक्षेप करती हैं. दिग्विजय सिंह कहते हैं- मुझे कुछ नहीं कहना. साध्वी की उम्मीदवारी से कोई फर्क नहीं पड़ता. उम्मीदवार कोई भी हो. चुनौती तब थी, आज भी है.

मप्र में लोस की 29 सीटें हैं. 2014 में कांग्रेस को तीन सीटें मिली थीं. इस बार पार्टी कितनी सीटों पर जीत रही? दिग्विजय सिंह कहते हैं- पिछली बार से तीन गुना अधिक. भोपाल शहर में 12 मई को चुनाव होना है, पर यहां अभी चुनाव का माहौल नहीं बन पाया है. शहर के चौक-चौराहों पर कोई पोस्टर नहीं, नारेबाजी नहीं दिखती. शहंशाह पार्क के सामने की सरकारी भवन की दीवार पर हाल ही में रामायण की पंक्तियां उकेरी गयी हैं. कुछ कलाकार अब भी चित्रकारी कर रहे हैं, पर राजनीतिक नारा कहीं नहीं दिख रहा. दिग्विजय सभाओं में शिवराज सिंह पर निशाना साधते हैं. इंदिरा गांधी की बात याद दिलाते हैं कि भोपाल बहुत सुंदर शहर है. इसे और भी सुंदर बनाओ.

भोपाल में रह रहे बिहारियों का यह है मूड

ज्यों-ज्यों चुनाव के दिन करीब आते जायेंगे, मतदाता मुखर होने लगेंगे. रेलवे अधिकारी और बिहार के मधुबनी जिले के नवहथ गांव के रहने वाले सुमन कुमार कहते हैं- मुकाबला एकतरफा नहीं है. वहीं मुजफ्फरपुर निवासी साफ्टवेयर इंजीनियर कुमुद कहते हैं- भ्रष्टाचार की खिलाफत करने वाली पार्टी को ही वोट देंगे. कस्टम अधिकारी ओम प्रकाश सिंह कहते हैं- कांग्रेस की किसानों की कर्जा माफी का असर ग्रामीण इलाकों में है. सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया में अधिकारी श्यामानंद दास शिवराज सिंह चौहान के मुरीद हैं. कहते हैं, बिड़ला मंदिर की सीढ़ियां उतरते पत्नी गिर पड़ी थीं. सामने से शिवराज आ रहे थे. वह खुद दौड़ पड़े और पत्नी को सहारा दिया. दास की नजर में दिग्विजय सिंह बड़े नेता हैं, लेकिन पब्लिक जुड़ाव शिवराज का है. सीवान जिले के रहने वाले गांधी शर्मा मेन बाजार में फर्नीचर का कारोबार करते हैं.

दिग्गी डाउन टू अर्थ हुए

इधर, मुकाबले को आसान नहीं मान, दिग्विजय सिंह डाउन टू अर्थ हो चुनाव प्रचार कर रहे. अभी तक उन्होंने पूरे क्षेत्र को चार बार छान मारा है. भाजपा के नेता कहते हैं- यहां तो पूरी सरकार लड़ रही है. कमलनाथ सरकार के छह मंत्री दिग्विजय की चुनावी कमान संभाले हुए हैं. सीतामढ़ी के मूल निवासी देवेंद्र चंद्र लाल मध्य प्रदेश की सरकार में कार्यरत हैं. वे कहते हैं- यहां काटे की टक्कर है. दिग्विजय सिंह के मुकाबले भाजपा किसी और को उम्मीदवार बनाती तो निर्णय कुछ और होता. मगर अब तो दिग्गी राजा का जोर है.

2014 का नतीजा

पार्टी	वोट	वोट%	लाभ/हानि
भाजपा	7,14,178	63.19	+12.24
कांग्रेस	3,43,482	30.39	-10.67
आप	21,298	1.88	----
बसपा	10,152	0.90	-1.93
सीपीआइ	7,643	0.68	----
नोटा	5,181	0.46	-----
जीत का अंतर	3,70,696	32.80	+22.91
कुल वोटिंग	11,30,182	57.75	+12.68

कौन कितनी बार जीता

कांग्रेस : 6 बार : 1952, 1957, 1962, 1971, 1980, 1984

जनसंघ : 1 बार : 1967

भालोद : 1 बार : 1977

भाजपा : 8 बार : 1989 से अब तक

ऐसे घटे-बढ़े वोट प्रतिशत

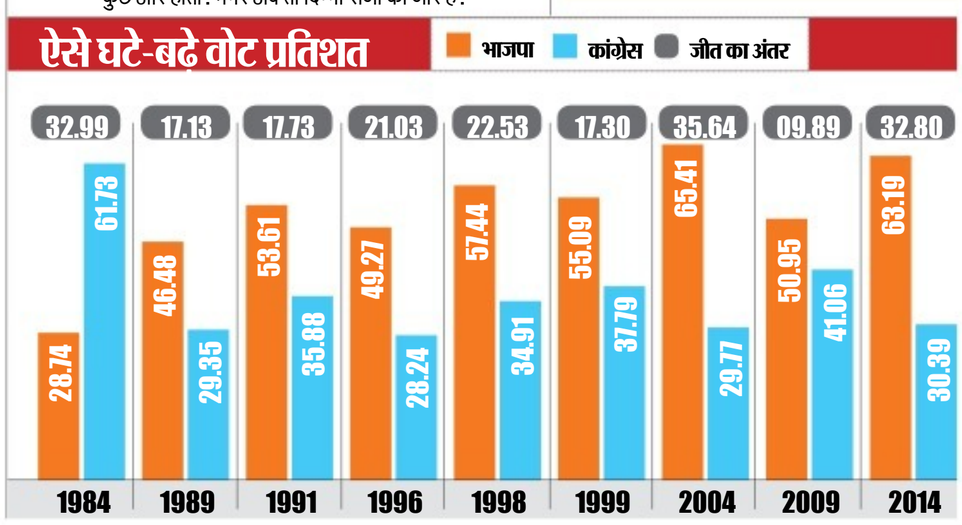

पहली बार

1957 : पहली बूथ कैप्चरिंग हुई थी

साढ़े तीन महीने तक चली थी वोटिंग प्रक्रिया

नयी दिल्ली. पहली लोकसभा के कार्यकाल पूरा होते ही 1957 में देश का दूसरा आम चुनाव हुआ. देश में पहली बार इसी साल बूथ कैप्चरिंग की घटना भी हुई. यह आम चुनाव करीब साढ़े तीन महीने तक चला. इसमें लोकसभा की सीटें 489 से बढ़ कर 494 कर दी गयी थी. इसी चुनाव में देश पहली बार बूथ कैप्चरिंग का गवाह बना. यह घटना बिहार के बेगूसराय जिले में रचियारी गांव में हुई थी. यहां के कछारी टोला बूथ पर स्थानीय लोगों ने कब्जा कर लिया. इसके बाद तो अगले तमाम चुनावों तक बूथ कैप्चरिंग की घटनाएं आम हो गयीं, खास कर बिहार में, जहां राजनीतिक पार्टियां इसके लिए माफिया तक का सहारा लेने लगीं.

रोचक जानकारियां

भाजपा और कांग्रेस के चुनाव चिह्न कई बार बदल चुके हैं. भाजपा पहले जनसंघ के नाम से जानी जाती थी, जिसका चुनाव चिह्न दीया था. 1980 में भाजपा बनी. तब इसका चुनाव चिह्न कमल का फूल हो गया. कांग्रेस का पहला चुनाव चिह्न जोड़ा बैल था. फिर गया और बछड़ा हुआ. इसके बाद पंजा चिह्न (हाथ छाप) बना, जो आज तक बरकरार है.

अमेरिकी चुनाव से महंगा होगा यह चुनाव

2019 के लोकसभा चुनाव पर कुल खर्च 50 हजार करोड़ (अनुमान) आने की संभावना है. 2016 में अमेरिकी चुनाव पर 42 हजार करोड़ खर्च हुए थे, जिसे पीछे छोड़कर यह चुनाव सबसे महंगा होगा. 2014 लोकसभा चुनाव पर 30 हजार करोड़ का खर्च आया था.

इस बार के चुनाव में गुजराती अस्मिता व राष्ट्रवाद बड़ा मुद्दा

अहमदाबाद से अंजनी कुमार सिंह

शहरी मध्य वर्ग का आकर्षण, पर अंडरकरेंट भी है

गुजराती अस्मिता और आतंकवाद बनाम राष्ट्रवाद के मुद्दे पर यहां के बुद्धिजीवी भी स्वीकार करते हैं कि यह बात खासकर शहरी मध्य वर्ग को अपनी ओर आकर्षित करता है, लेकिन ऐसे मुद्दे के खिलाफ एक अंडरकरेंट भी चल रहा है, जो अभी दिख नहीं रहा, लेकिन चुनाव परिणाम में दिखे. गुजरात यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर किरण देसाई कहते हैं, ये मुद्दा वोकल मध्यवर्ग को प्रभावित करता है. ऐसे मुद्दे के कारण मुख्य मुद्दे गौण हो गये हैं. गुजराती अस्मिता, आतंकवाद, राष्ट्रवाद को हम किस रूप में परिभाषित करते हैं, यह भी महत्वपूर्ण है. चुनाव के समय ऐसे मुद्दों पर फोकस कर जनता वोट करती है, तो निश्चित रूप से इसका फायदा भाजपा को मिलेगा.

अहमदाबाद से लगभग 40 किलोमीटर दूर देहगाम ताल्लुका में लगभग सौ गांव हैं, जिसमें खेतिहर और दलित परिवार की संख्या ज्यादा है. इनकी अपनी समस्याएं हैं. कुछ किसान सरकार से नाराज भी हैं. गोपालकों की भी अपनी मांगे हैं, लेकिन सरकार के प्रति नाराजगी और शिकायतें से ज्यादा उनके लिए गुजराती अस्मिता और राष्ट्रवाद महत्वपूर्ण है.

चाय दुकान पर बैठे 80 वर्षीय गोविंद गिरी कैलाश गिरी गोस्वामी गुजराती 'वडा प्रधान' (प्रधानमंत्री) के लिए एक बार फिर से भाजपा को वोट देने की बात कहते हैं. बताते हैं, यह गुजरात के लिए गर्व की बात है कि मोदी एक बार फिर से 'वडा प्रधान' बनें. नरेंद्र भाई कहते हैं, यह गुजरात की अस्मिता का सवाल है. आज जैसे ही 'वडा प्रधान' का नाम आता है, तो गुजरात का नाम भी आता है. यही विचार हरेश भाई, लाल शाह भी जाहिर करते हैं. हालांकि, कुछ लोग इसे वोट बैंक पॉलिटिक्स बता रहे हैं. भाई रशिद कहते हैं, बेरोजगारी चरम पर है. जीएसटी, नोटबंदी ने कमर तोड़ दी है. अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग मुद्दे हैं, लेकिन गुजराती अस्मिता और आतंकवाद की चर्चा शहरी मध्य वर्ग के बीच ज्यादा है.

अहमदाबाद के बेजलपुर इलाके के दो समुदाय गुजराती इस मुद्दे पर बंटे दिखते हैं. एकता मैदान से सटे बैजलपुर और जुहापुरा को एक रोड बांटती है. जुहापुरा के ज्यादातर लोग इस मुद्दे को बेमानी बताते हैं. हबीब भाई अजमेरी, इमरान भाई पेंटर, निसार भाई बापू कहते हैं, यह सिर्फ वोट लेने और असली मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए है. वहीं सड़क के दूसरी ओर संजय भाई, हरीश भाई दरवार कहते हैं, गुजराती अस्मिता का सवाल गुजरात के लिए सर्वोपरि है, जिन्हें अपनी अस्मिता और राष्ट्रीयता से प्यार नहीं हैं, उनके विषय में आप खुद ही अंदाजा लगा सकते हैं कि वह किस से प्यार करते हैं.

बांग्लादेश से रोज के रिश्ते, पर चुनाव प्रचार पर पहला बवाल

कोलकाता से अजय विद्यार्थी

पश्चिम बंगाल लोकसभा चुनाव में बांग्लादेशी विवाद से राज्य की राजनीति गरमा गयी है. पश्चिम बंगाल की सीमाएं बांग्लादेश से सटी हुई है. स्वास्थ्य व शिक्षा सहित विभिन्न मूलभूत जरूरतों को लेकर बांग्लादेश के लोगों का पश्चिम बंगाल प्रायः ही आना-जाना लगा रहता है. कइयों के पारिवारिक रिश्ते दोनों देशों में हैं. दोनों देशों में बनी बांग्ला फिल्में व टीवी सीरियल परस्पर देशों में समान रूप से देखे, पसंद किये जाते हैं, पर हाल में चुनाव के दौरान अप्रत्याशित घटना घटी, जिससे राज्य की राजनीति में गरमा गयी है. अंततः केंद्रीय गृह मंत्रालय को हस्तक्षेप करना पड़ा है.

पहली बार बांग्लादेशी अभिनेताओं ने किया चुनाव प्रचार : बांग्लादेशी अभिनेता फिरदौस अहमद और गाजी अब्दूल नूर ने रायगंज और दमदम लोस क्षेत्र से टीएमसी उम्मीदवारों के पक्ष में चुनाव प्रचार किया. बंगाल में ऐसा पहली बार हुआ. भाजपा की शिकायत और ब्यूरो ऑफ इमिग्रेशन की रिपोर्ट के आधार गृह मंत्रालय ने इन दोनों का वीजा रद्द कर दिया और 'भारत छोड़ने' का नोटिस जारी कर दिया. इन्हें ब्लैक लिस्टेड कर दिया गया है. नूर वीजा अवधि समाप्त होने के बाद भी भारत में रुके रहे. हालांकि दोनों अभिनेताओं ने अपनी गलती स्वीकार करते हुए माफी भी मांगी है, लेकिन राज्य की राजनीति में विदेशी हस्तक्षेप की मुद्दा गरमाया हुआ है. राजनीतिक दल परस्पर एक-दूसरे पर आरोप लगा रहे हैं.

बांग्लादेशी घुसपैठ और शरणार्थी का मुद्दा पहले से ही

बांग्लादेशी घुसपैठ और शरणार्थियों का मुद्दा राज्य में पहले से उठता रहा है. पीएम नोदी ने साफ कहा कि भाजपा दोबारा सत्ता में आती है, तो घुसपैठियों को बाहर निकाला जायेगा, हिंदू शरणार्थियों को नागरिकता मिलेगी. बंगाल में भी एनआरसी लागू होगा. टीएमसी इसका विरोध कर रही है. भाजपा का आरोप है कि बांग्लादेश से सटे जिलों में बड़ी संख्या में बांग्लादेशी घुसपैठियों के कारण जनसंख्या अनुपात बदल गया है. इसका चुनावी राजनीति पर प्रभाव पड़ रहा है.

चुनावी किस्सा

अभिनेता से नेता की ओर, बसपा के साथ

पवन कल्याण

तेलुगु फिल्मों के लोकप्रिय अभिनेता

विरंजीवी की प्रजा राज्यम पार्टी से राजनीति शुरू की

अभिनेता से राजनेता बने पवन कल्याण तेलुगु फिल्मों के लोकप्रिय अभिनेता हैं. पवन कल्याण ने 2008 में अपने बड़े भाई और मेगास्टार चिरंजीवी की प्रजा राज्यम पार्टी से राजनीतिक पारी शुरू की थी. हालांकि उन्होंने कोई चुनाव नहीं लड़ा. 2011 में प्रजा राज्यम पार्टी के कांग्रेस में विलय के बाद पवन कल्याण ने 2014 में जन सेना नामक पार्टी बनायी. 2014 के लोकसभा चुनाव में उन्होंने भाजपा और टीडीपी के लिए चुनाव प्रचार किया. 2017 में उन्होंने घोषणा की कि वह पूर्ण रूप से राजनीति में रहेंगे. वर्तमान में उनकी पार्टी बसपा के साथ मिल कर लोकसभा चुनाव के साथ-साथ आंध्र प्रदेश के विधानसभा चुनाव लड़ रही है.

पड़ताल

राहुल गांधी के चुनाव लड़ने से सुर्खियों में है केरल की यह सीट, यहां 28% मुस्लिम व 21 % ईसाई

मुस्लिम बहुल वायनाड में रामायण से जुड़े हैं 30 स्थलों के नाम

नेशनल कंटेंट सेल

कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी के वायनाड लोस सीट से चुनाव लड़ने की घोषणा के बाद से ही यह बात तेजी से फैली कि अल्पसंख्यकों की बड़ी आबादी के कारण ही वह यहां से चुनाव लड़ने उतरे, पर वायनाड जिले में करीब 30 स्थान ऐसे हैं, जिनका नाम रामायण पर आधारित है. जनजातीय समुदायों के मौखिक रामायण का जो भाषायी स्वरूप स्थापित हुआ है, उससे उपजे नामों पर. इनमें पलपल्ली के निकट आश्रमम कोल्ली स्थित वाल्मीकि आश्रम, अंबुकुटी माला, सीता माउंट जडायट्टकावु, काबानी नदी की सहायक कन्नाराम पुझा, पोंकुझी, रामपल्ली इरुलाम प्रमुख हैं..

हर समुदाय ने गढ़ा रामायण का स्वरूप

विशेषज्ञ कहते हैं, चाहे स्थानों के नाम हों या लोक कथाएं और लोकगीत, या फिर कला, मंदिर, नदियां व पहाड़, यहां हर जगह रामायण जिंदा है. ये सभी मौखिक रूप से प्रचलित परंपराओं पर आधारित हैं, जो आदि रामायण की तरह मुख्य धारा से थोड़े अलग स्वरूप में हैं. यहां हर जनजातीय समुदाय ने अपने हिसाब से रामायण को गढ़ा है. यह उनकी संस्कृति और यहां तक कि पर्यावरण में भी परिलक्षित होता है. वायनाड और रामायण के कनेक्शन को लेकर किताब भी लिखी गयी है, और डॉक्यूमेंट्री भी बनी है.

पर्यटन विभाग तैयार कर रहा 'रामायण शृंखला'

वायनाड के जनजातीय समुदायों की मौखिक कहानियां के अनुसार रामायण में उल्लेखित कई प्रसंग वायनाड के आसपास घटित हुए. अब केरल का पर्यटन विभाग इन स्थानों को परस्पर प्रासंगिक रूप से जोड़ते हुए 'रामायण शृंखला' स्थापित करने की तैयारी कर रहा है. इसका प्रोजेक्ट तैयार हो चुका है.

वायनाड : एक नजर 8,17,420 आबादी

(इनमें करीब 18% जनजातीय, जो राज्य में सबसे ज्यादा)

सभी आंकड़े प्रतिशत में

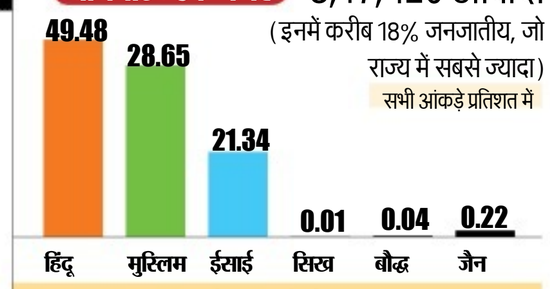

पिछले चुनावों में स्थिति

- **2014** : कांग्रेस के एमआइ शानवास विजयी 73.75% वोटिंग, अंतर : 20,870
- **2009** : कांग्रेस के एमआइ शानवास विजयी 74.73% वोटिंग, अंतर : 1,53,439

कार्टून कोना